VPM CLASSES

NTA UGC NET

PHILOSOPHY

SOLVED SAMPLE PAPER

(Hindi Medium)

* DETAILED SOLUTIONS
* NEW SYLLABUS
* NEW PATTERN

9001894070

www.vpmclasses.com

UGC NET दर्शन शास्त्र FMTP

समय–2 घण्टे (प्रश्नपत्र II) अधिकतम अंक : 200

नोट : इस प्रश्नपत्र में 100 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का हैं। सारे प्रश्न करना अनिवार्य हैं।

1. नागार्जुन प्रवर्तक है –

(1) सांख्यिकी के (2) शून्यवाद के

(3) बुद्धिवाद के (4) अनुभववाद के

2. जैन दर्शन में द्रव्य वह है जो –

(1) गुणों से युक्त हो (2) पर्यायों से युक्त हो

(3) गुणों व पर्याय दोनों से युक्त हो (4) न गुण और न पर्याय से युक्त हो

3. ''कार्यनियत पूर्ववृत्ति कारणय्'' यह कथन है –

(1) अरस्तू का (2) जैनों का

(3) बौद्धों का (4) अन्नभट्ट का

4. 'काल' को जैनदर्शन में कहा जाता है –

(1) अनेकांतवादी (2) अस्तिकाय

(3) नास्तिकाय (4) उपरोक्त सभी

5. रामानुज ने अचित द्रव्य के कितने प्रकार बताए है –

(1) तीन प्रकार (2) चार प्रकार

(3) पाँच प्रकार (4) आठ प्रकार

6. प्लेटो को स्वीकार्य है–

(1) संसार के विभिन्न पदार्थ अपने–अपने सामान्य के कारण असत् प्रतीत होते हैं

(2) संसार के विभिन्न पदार्थ अपने–अपने सामान्य के कारण सत् प्रतीत होते हैं

(3) संसार के सभी पदार्थ एक ही सामान्य के कारण सत् प्रतीत होते है।

(4) संसार के कोई भी पदार्थ सामान्य के कारण सत् प्रतीत नहीं होते हैं

VPM CLASSES

7. अरस्तू के कारणता सिद्धान्त में किसी वस्तु का तत्व या सार कहलाता है –

(1) उपादान कारण (2) निमिन्त कारण

(3) स्वरूप कारण (4) लक्ष्य कारण

8. व्यक्तियों के सर्वनिष्ट अनिवार्य धर्म को कहते है –

(1) विशेषता (2) कारणता

(3) सामान्य (4) उपरोक्त 1 व 2

9. प्रमा है –

(1) सीप को चाँदी समझना (2) चाँदी को सीप समझना

(3) यथार्थ ज्ञान (4) अथार्थ ज्ञान

10. मीमांसा के अनुसार ज्ञान अप्रामाण्य होता है –

(1) कारणता दोष के कारण (2) अर्थ दोष के कारण

(3) विन्यास दोष के कारण (4) संस्पना दोष के कारण

11. कुमारिल का भ्रम सिद्धान्त है–

(1) असत्ख्यातिवाद (2) विपरीतख्यातिवाद

(3) सद्ख्यातिवाद (4) अन्यथाख्यातिवाद

12. योगारचार सम्प्रदाय को स्वीकार्य है–

(1) विपरीत ख्यातिवाद (2) अख्यातिवाद

(3) आत्म ख्यातिवाद (4) अनिर्वचनीय ख्यातिवाद

13. लॉक के अनुसार ज्ञान के कितने प्रकार है –

(1) दो प्रकार (2) तीन प्रकार

(3) सात प्रकार (4) दस प्रकार

14. न्याय के अनुसार निम्न में से कौनसा एक ज्ञान का स्त्रोत नहीं है –

(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान

(3) शब्द (4) अर्थापत्ति

VPM CLASSES

15. सत्यता का प्रतिमान है –

(1) संसक्तता (2) वाक्य

(3) तर्कवाक्य (4) शब्द

16. देकार्त के अनुसार दर्शन की पहली सीढ़ी है –

(1) आध्यात्मिकता (2) आत्मा

(3) सन्देह (4) ज्ञान

17. हैत्वाभास का अर्थ है –

(1) हैतु का प्रत्यक्ष होना (2) हैतु का आभास होना

(3) हैतु की अनुपलब्धि होना (4) उपरोक्त सभी

18. न्याय के अनुसार अलौकिक प्रत्यक्ष के भेद है –

(1) सामान्य लक्षण (2) ज्ञान लक्षण

(3) योगज (4) उपरोक्त सभी

19. जिस व्याप्ति में हैतु व साध्य परस्पर स्थान परिवर्तित नहीं कर सकते वह कहलाती है –

(1) सम व्याप्ति (2) विषय व्याप्ति

(3) सम व विषय दोनों व्याप्ति (4) अव्ययी व्याप्ति

20. ''मितेन लिंगेन अर्थस्य अनुपश्चान्यानमनुमानम्'' उपरोक्त परिभाषा है –

(1) प्रत्यक्ष की (2) अनुमान की

(3) हैत्वाभास की (4) व्याप्ति की

21. शंकर के अनुसार ज्ञान के साधन है –

(1) श्रवण (2) मनन

(3) निदिध्यासन (4) उपरोक्त सभी

22. निम्न में से मोक्ष को कौनसा भारतीय दर्शन परम पुरूषार्थ नहीं मानता ?

(1) चार्वाक (2) जैन

(3) बौद्ध (4) सांख्य

VPM CLASSES

23. गृहस्थों का प्रधान लक्ष्य था–

(1) पितृ ऋण से मुक्त होना। (2) ऋषि ऋण से मुक्त होना

(3) मानव ऋण से मुक्त होना। (4) देव ऋण से मुक्त होना।

24. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

(1) फलाकांशा या फलासक्ति का वर्जन (2) कर्त्तव्य के अभिमान का परित्याग

(3) ईश्वरार्पण

उपरोक्त कथनों में से कर्मयोग के सोपान है –

(1) 1 व 2 (2) 2 व 3

(3) 1, 2 व 3 (4) केवल 2

25. गुण और कर्म के आधार पर वर्गीकृत वर्णों के लिए निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन कहलाता है –

(1) स्वः धर्म (2) समाज धर्म

(3) देश धर्म (4) जगत धर्म

26. निम्न में से कौनसा एक डब्ल्यू.डी.रॉस की 'उचित' की अवधारणा से संबंधित है –

(1) यह सुख की परिधि में है (2) यह उपयोगिता की परिधि में है

(3) यह विलक्षण है (4) यह वर्णनीय है

27. सामाजिक रीति–रिवाजों के कारण शूद्रों को पूजा स्थल पर न जाने देना, निम्न में से किस दृष्टि से जायज नहीं माना जा सकता –

(1) नैतिक दृष्टि से (2) सामाजिक दृष्टि से

(3) कानूनी दृष्टि से (4) उपरोक्त सभी

28. निम्न में से कौनसा युग्म सही रूप से सुमेलित है ?

(1) हर्बर्ट स्पेन्सर – स्वास्थान एवं उसके कर्त्तव्य

(2) टी. एच. ग्रीन – शुभ आचार पिकसित आचार

(3) जेरेमी बेन्थम – अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख

(4) इमैनुएल काण्ट – शुभ आचार स्थिति पर निर्भर है

VPM CLASSES

29. नैतिक उत्तरदायित्व का निर्धारण करने तथा निर्णय करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है –

(1) प्रयास (2) ज्ञानता

(3) विवशता (4) उपरोक्त 1 व 3

30. अपराधी को साध्य समझा जाता है –

(1) दण्ड के प्रतिकारात्मक सिद्धात्त में (2) दण्ड के निवारक सिद्धात्त में

(3) दण्ड के सुधारात्मक सिद्धात्त में (4) उपरोक्त सभी में

31. ''इस प्रकार कार्य करो कि तुम्हारा संकल्प अपने आपको सार्वभौतिक नियमों का विधायक समझे।'' यह कथन काण्ट के किस नैतिक नियम का है –

(1) सार्वभौतिकता का नियम (2) मनुष्यता को साध्य मानने का नियम

(3) स्वाधीनता का नियम (4) साध्यों के राज्य का नियम

32. मिल के उपयोगितावाद सिद्धात्त के सन्दर्भ में निम्न में से सत्य है –

(1) नैतिकता के लिए एक इन्द्रियातित आधार की आवश्यकता है

(2) यह मनोवैज्ञानिक सुखवाद से समर्थन प्राप्त करता है

(3) यह लोगों को इसकी अनुमति नहीं देता कि वे एक प्रकार के सुख को दुसरों से बेहतर मानें

(4) इससे यह आपादित नहीं होता है कि किसी भी कर्म के सही होने के सवाल पर सिद्धान्ततः हरेक मामले में निर्णय लेना संभव नहीं है।

33. ''नियम को आदर प्रदान करने के दृष्टिकोण से कर्त्तव्य पालन अनिवार्यता है।'' इस परिभाषा में प्रयुक्त नियम शब्द का अर्थ है –

(1) सामाजिक संहिता (2) न्याय पद्धति

(3) दिव्य नियम (4) नैतिक नियम

34. बनावट के आधार पर तर्कवाक्यों के प्रकार होते है –

(1) दो प्रकार (2) चार प्रकार

(3) सात प्रकार (4) पाँच प्रकार

VPM CLASSES

35. वह सिद्धात्त जो यह मानता है कि हर एक विशेष कर्म के सही या गलत होने का निर्णय उच्चतम संख्या का उच्चतम आनन्द के सिद्धात्त पर लागू होने पर कहलाता है –

(1) सुखवादी कर्म उपयोगितावाद सिद्धात्त

(2) आदर्श कर्म उपयोगितावाद सिद्धात्त

(3) सुखवादी नियम उपयोगितावाद सिद्धात्त

(4) आदर्श नियम उपयोगितावाद सिद्धात्त

36. निम्न में से विचार के किस नियम को लाइब्नीज ने प्रतिपादित किया है –

(1) तादात्म्य नियम (2) व्याधात नियम

(3) मध्याभाव नियम (4) पर्याप्त कारण नियम

37. अन्वय प्रणाली तथा व्यतिरेक प्रणाली का रुपान्तर हो सकती है–

(1) अन्व्य व्यतिरेक प्रणाली (2) सह–परिवर्तन प्रणाली

(3) अवशेष प्रणाली (4) उपरोक्त सभी

38. वैधता या अवैधता विशेषताएँ है–

(1) तर्कवाक्य के (2) युक्तियो की

(3) उपरोक्त 1 व 2 (4) उपरोक्त में से कोई नही

39. तुलनात्मक अध्ययन किस सिद्धान्त द्वारा धार्मिक एकता को संभव बनाना चाहता है?

(1) ज्ञान प्राप्ति द्वारा (2) ब्रह्म प्राप्ति द्वारा

(3) मोक्ष प्राप्ति द्वारा (4) प्राप्ययों द्वारा

40. फारस के पारसी धर्म को किसके समकक्ष माना जाता है?

(1) वैदिक धर्म के (2) अवैदिक धर्म के

(3) उपरोक्त 1व 2 (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

41. नालान्दा, तक्षशिला आदि शिक्षा के केन्द्र किस धर्म से संबंधित थे?

(1) हिन्दू के वैदिक धर्म से (2) जैन धर्म से

(3) बौद्ध धर्म से (4) सिक्ख धर्म से

VPM CLASSES

42. कॉमन प्लेस बुक नामक कृति है–

(1) लॉक की (2) बर्कले की

(3) रसेल की (4) काण्ट की

43. निम्नलिखित प्रतिज्ञाप्तियो को A-E-I-O के रुपो में पहचानिएं और उसके नीचे दिए गए कूटो का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

1. कोई भी प्रसन्नचित व्यक्ति दुश्चरित्र नही होता है।

2. सभी दुश्चरित्र व्यक्ति अप्रसन्नचित व्यक्ति होते है।

3. कुछ ही छात्र तर्कशास्त्र पढ़ते है

4. सभी छात्र दर्शनशास्त्र के छात्र नही है।

	1	2	3	4
(1)	1-I	2-A	3-E	4-O
(2)	1-I	2-O	3-I	4-A
(3)	1-I	2-O	3-E	4-A
(4)	1-E	2-A	3-I	4-O

44. ''नोदना लक्षणो धर्मः'' यह वाक्य है–

(1) बौद्ध धर्म (2) इस्लाम धर्म

(3) यहूदि धर्म (4) मीमांसा

45. भारतीय दर्शन में आत्मा की अमरता में विश्वास का आधार है–

(1) कर्मवाद (2) भक्तिवाद

(3) ज्ञानवाद (4) वाद–विवाद

46. सी.एस. पर्स के किस सिद्धान्त में ''प्रयोगो का विचार'' आता है–

(1) सौपाधिकता के स्तर में (2) व्यवहार का स्तर

(3) पूर्वसूचक स्तर (4) फलो के अनुभव का स्तर

VPM CLASSES

47. वियना में निम्न में से किस एक का उद्‌भव हुआ

(1) राष्ट्रवाद का (2) तार्किक भाववाद का

(3) उग्र राष्ट्रवाद का (4) साम्प्रदायिकता का

48. ''वस्तुस्थिति विषयो को संघात है'' यह कहा–

(1) नीत्शे ने (2) जी.ई. मूर ने

(3) बर्टेड रसेल ने (4) विटगेन्सटाइन

49. भाषा वाक्य ये वाक्य के आधार पर नही अपितु समग्र रुप से कार्य करती है। यह मान्यता है–

(1) पी. एफ स्ट्रॉसन (2) विटगेन्सटाइन

(3) हाइडेगर (4) क्वाइन

50. वर्कले को दृष्टि सृष्टिवादी कहा गया है–

(1) सत्ता को प्रत्यक्षमूलक मानने के कारण

(2) सत्ता को बुद्धिमूलक मानने के कारण

(3) सत्ता को अनुभवमूलक मानने के कारण

(4) सत्ता का अनुमान मूलक मानने के कारण

51. अभिप्राय में संम्मिलित होते है–

(1) प्रयोजन (2) परिणाम

(3) अन्तः प्रज्ञा (4) उपरोक्त 1 व 2

52. वैधन्याय वाक्य में जब साध्य आधारिका में साध्य पद प्राप्त होता है तो पक्ष आधारिका में इसका हैतु पद व्याप्त नही हो सकता। यह शर्तें मान्य होंगी–

(1) केवल तृतीय आकृति में

(2) केवल प्रथम आकृति में

(3) केवल चतुर्थ अथवा द्वितीय आकृति में

(4) किसी भी आकृति में

VPM CLASSES

53. बेन्थम के अनुसार निम्न में से कौनसा एक कथन सही नही है–

(1) सुखों को मात्रात्मक मापा जा सकता है एवं तुलना की जा सकती है।

(2) नैतिकता में अन्तविवेक के प्रकाश की कोई भूमिका नही है।

(3) दूरगामी परिणामो के लिए पारम्परिक नैतिक नियमो को तोड़ा जो सकता है।

(4) स्वयंसिद्ध प्राकृतिक अधिकार होते हैं

54. एक दार्शनिक सिद्धान्त जो कि किसी वस्तुगत हितरहित, वास्तविकता का खण्डन करता है, वह निम्नलिखित सत्यता सिद्धान्तों में से आपादित है। निम्नलिखित में से एक ठीक सिद्धान्त की पहचान कीजिए–

(1) संगतता सिद्धान्त (2) संसक्तता एवं अर्थ क्रियावादी सिद्धान्त

(3) अर्थक्रियावादर सिद्धान्त (4) संसक्तता सिद्धान्त

55. नियामक विज्ञान के निर्णयों की प्रकृति होती है–

(1) मूल्याश्रित (2) तथ्यात्मक

(3) विश्लेषणात्मक (4) द्वन्दात्मक

56. प्लेटो के अनुसार आत्मा अमर है क्योकि–

(1) आत्मा सरल द्रव्य है

(2) वह मृत्यु एवं विनाश से परे है

(3) आत्मा स्वरुपगत जीवन में भाग नही लेती है

(4) उपरोक्त 1 व 2

57. आगमन के लक्षण बताए गये हैं–

(1) तीन लक्षण (2) चार लक्षण

(3) सात लक्षण (4) दस लक्षण

58. धार्मिक ज्ञान सिद्धान्तो को बाटाँ गया है–

(1) संज्ञानात्मक सिद्धान्त (2) असंज्ञानात्मक सिद्धान्त

(3) अर्द्धसंज्ञानात्मक सिद्धान्त (4) उपरोक्त सभी

59. अब्राहम ज्येइबर किस धर्म से संबंधित है।

(1) हिन्दू धर्म (2) इस्लाम धर्म

VPM CLASSES

(3) यहूदी धर्म (4) पारसी धर्म

60. अवतारो में क्रोध की प्रतिमूर्ति हिंसक प्रवृत्ति वाले है–

(1) परशुराम (2) नृसिंहावतार

(3) दशावतार (4) कृष्णवतार

61. जॉर्ज सान्त्याना जाने जाते है–

(1) जीव विज्ञान के प्रणेता के रुप में (2) वनस्पति विज्ञान के प्रणेता के रुप में

(3) घटना विज्ञान के प्रणेता के रुप में (4) उपरोक्त सभी

62. फिनामेनोलॉजी के अनुसार दूनिया की वास्तविकता को जाना जा सकता है–

(1) प्रत्यक्ष द्वारा

(2) अपनी इन्द्रियो और मानसिक प्रक्रियाओं द्वारा

(3) सत्यातिवाद द्वारा

(4) उपरोक्त सभी

63. अद्वैत वेदान्त के प्रस्थान निम्नलिखित में से है–

(1) विवरण प्रस्थान – प्रकाशात्मा (2) भामती प्रस्थान वाचस्पति मिश्र

(3) पार्तिक प्रस्थान सुरेश्वराचार्य (4) उपरोक्त सभी

64. शंकर के मत में परमार्थिक सत्ता है–

(1) स्वप्न (2) ब्रह्म (3) भ्रम (4) जीव

65. रामानुज के दर्शन को विशिष्टाद्वैत कहते है, क्योकि–

(1) ब्रह्म, चित्र और अचित्र अंशो से विशिष्ट होकर अनेक है।

(2) ब्रह्म चित्र ओर अचित्र अंशो से विशिष्ट होकर एक है

(3) ब्रह्म केवल चित्र से विशिष्ट होकर एक है

(4) ब्रह्म केवल अचित्र से विशिष्ट होकर अनेक है

66. रामानुज ने मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया है–

(1) तपस्या को (2) ज्ञान को

VPM CLASSES

(3) भक्ति को (4) कर्म को

67. शुद्वाद्वैतवाद के अनुसार ब्रह्म जगत की रख्ना का है–

(1) निमित्त कारण (2) उपादान कारण

(3) उपरोक्त 1 व 2 (4) न निमित्त और न उपादान कारण

68. शंकर के अनुसार मोख को ज्ञान का कार्य कहा जा सकता है–

(1) हाँ कहा जा सकता (2) नही कहा जा सकता

(3) उपरोक्त 1 व 2 (4) उपरोक्त में से कोई नही

69. भास्कराचार्य निम्न से किस सम्प्रदाय के प्रवर्तक है?

(1) अद्वैत वेदान्त के (2) द्वैताद्वैतवाद के

(3) द्वैतवाद के (4) भेदाभेदवाद के

70. गाँधी जी के दर्शन पर किन भारतीय दर्शनो का प्रभाव दिखाई देता है?

(1) वेद, का (2) वेद, उपनिषद का

(3) वेद, उपनिषद गीता का (4) वेद, उपनिषद, गीता, वेदान्त व वैष्णव वेदान्त का

71. क्या सर्वोदय उपयोगितावाद है–

(1) हाँ है (2) नही है

(3) है भी और नही भी (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

72. गाँधी जी के अनुसार सामाग्रही बनने में निम्नलिखित में से क्या आवश्यक नही है?

(1) आत्मानुशसित होना चाहिए (2) सरल, निष्कपट होना चाहिए

(3) ताकतवर होना चाहिए (4) निर्भय होना चाहिए

73. चोरी करने के परित्याग को काहा गया है–

(1) अमय (2) अस्तेय

(3) अपरिग्रह (4) अस्वाद

74. गाँधीजी सत्य और अहिंसा की प्रप्ति के लिए आवश्यक मानते थे–

(1) कायिक श्रम को (2) अस्पृश्यता को

VPM CLASSES

(3) स्वदेशी को (4) ब्रह्मचर्य को

75. ''जो दम्पत्ति गृहस्थाश्रम में रहते हुए केवल प्रजोत्पत्ति हैतु ही परस्पर संभोग करते है वे ठीक ब्रह्मचारी ही है। यह विचार है–

(1) गाँधी (2) टैगार

(3) इकबाल (4) नेहरु

76. 'पूर्ण और पश्चिम या सम्पर्क अधिकारी' निम्न में से किस दार्शनिक को कहा गया है–

(1) राधाकृष्णन (2) टैगोर

(3) विवेकानन्द (4) इकबाल

77. गांधी जी के अनुसार ईश्वर की अभिव्यक्ति है–

(1) सत्य (2) अहिंसा

(3) सत्य व अहिंसा दोनों (4) मानव

78. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिये–

सूची–I	सूची–II
(A) थेलस	(i) संख्या
(B) अनेक्जिमेण्डर	(ii) जल
(C) अनेक्जिमेनीज	(iii) असीम
(D) पाइथागोरस	(iv) वायु

	A	B	C	D
(1)	A-(i)	B-(ii)	C-(iii)	D-(iv)
(2)	A-(ii)	B-(iii)	C-(iv)	D-(i)
(3)	A-(iv)	B-(iii)	C-(ii)	D-(i)
(4)	A-(iii)	B-(ii)	C-(i)	D-(iv)

79. सोफिस्ट सम्प्रदाय के संस्थापक है–

(1) प्रोटागोरस (2) थैलीज

VPM CLASSES

(3) एपीक्यूरस (4) प्लेटो

80. प्लेटो के अनुसार विशेष होते हैं–

(1) सामान्य ही (2) सामान्य के प्रतिरूप

(3) विशेष के प्रतिरूप (4) स्वयं सामान्य के सदृश

81. अरस्तू का सामान्य है–

(1) अनित्य (2) अपरिणामी

(3) विनाशी (4) पुद्गली स्वरूप

82. आधुनिक दर्शन का जनक निम्न में से किसे माना जाता है–

(1) देकार्त (2) स्पिनोजा

(3) लाइब्निज (4) लॉक

83. स्पिनोजा के द्रव्य की विशेषता है–

(1) आत्मनिर्भर तथा आत्मभावना युक्त

(2) आत्मनिर्भर हो तथा जिसकी अन्य भावना हो

(3) दूसरे पर निर्भर हो तथा आत्मभावना हो

(4) उपरोक्त 2 व 3

84. लाइब्निज के चिदणुओं को कहा जा सकता है–

(1) परमाणु (2) भौतिक

(3) आध्यात्मिक (4) उपरोक्त सभी

85. क्या लॉक जन्मजात प्रत्ययों को मानते हैं–

(1) हां मानते हैं (2) नहीं मानते हैं

(3) मानते भी हैं और नहीं भी मानते (4) उपरोक्त में से कोई नहीं

86. बर्कले के अनुसार ज्ञान का स्त्रोत क्या है?

(1) अनुभव (2) बुद्धि

(3) प्रत्यय (4) विज्ञान

87. ह्यूस के अनुसार कारणता से संबंधित घटकों की संख्या है–

(1) चार (2) आठ

VPM CLASSES

(3) बारह (4) तीन

88. काण्ट ने 12 प्रकार की धारणाओं का विभाजन चार प्रकार से किया है, तब उन 12 धारणाओं का विभाजन निम्न में से किसके आधार पर नहीं है।

(1) गुण (2) परिमाण

(3) परिणाम (4) सम्बंध

89. हैगेल ने 20 वर्ष की आयु में उपाधि प्राप्त की–

(1) डॉ. ऑफ जुलॉजी (2) डॉ. ऑफ हिस्ट्री

(3) डॉ. ऑफ फिलासफी (4) डॉ. ऑफ बॉटनी

90. प्रत्ययवाद के कटु आलोचक के रूप में किसे जाना जाता है?

(1) बर्कले (2) मूर

(3) रसेल (4) उपरोक्त 2 व 3

91. विटगेन्सटीन के अनुसार दार्शनिक चिन्तन का केन्द्र है–

(1) दर्शन (2) भाषा

(3) बुद्धि (4) अनुभव

92. जेम्स के अनुसार सत्य निम्न में से कौनसा लक्षण है–

(1) विचार का (2) विश्वास का

(3) कर्त्तव्य का (4) उपरोक्त 1 व 2 का

93. निम्न में से किसकी दृष्टि में आत्मा एक स्वतंत्र सत्ता है?

(1) श्री अरविंद (2) रविन्द्रनाथ टैगोर

(3) के.सी. भट्टाचार्य (4) इकबाल

94. ह्यूम के अनुसार नैतिक तर्क में 'हैं' से 'होना चाहिए' की ओर अग्रसर होना–

(1) असंभव है (2) सन्दोष तर्क का उदाहरण है

(3) संभव है (4) उपरोक्त सभी

95. प्लेटो निम्न में से नहीं है–

(1) वस्तुवादी (2) विज्ञानवादी

VPM CLASSES

(3) प्रपंचवादी (4) पंत्रवादी

96. अरस्तू के अनुसार प्रयोजन कारण से आशय है–

(1) जिससे वस्तु का निर्माण होता है

(2) वह साध्य या उद्धेश्य जिसकी सिद्धि के लिए वस्तु का निर्माण

(3) वस्तु की परिभाषा द्वारा अभिव्यक्त होता है

(4) जिससे गति या परिवर्तन होता है

97. देकार्त के अनुसार बुद्धि के व्यापार है–

(1) प्रतिमान (2) निगमन

(3) आगमन (4) उपरोक्त सभी

98. एथिका के लेखक हैं–

(1) स्पिनोजा (2) अरस्तू

(3) प्लेटो (4) टैगोर

99. ह्यूम ने कहा है आत्मा–

(1) नित्य है (2) कूटस्थ एवं नित्य द्रव्य है

(3) क्षणिक विज्ञानों का प्रवाह है (4) विज्ञानों का अधिष्ठान है।

100. अष्टांग योग का अंग नहीं है–

(1) यम (2) नियम

(3) प्रत्याहार (4) भोजन

VPM CLASSES

QUESTION	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
ANSWER	2	3	4	3	1	2	3	3	3	1	2	3	2	4	1	3	2	4	2	2
QUESTION	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
ANSWER	4	1	4	3	1	3	1	3	4	3	3	2	4	1	1	4	2	2	2	1
QUESTION	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
ANSWER	3	2	4	4	1	2	2	4	4	3	4	2	4	3	1	4	2	4	3	1
QUESTION	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
ANSWER	3	2	4	2	2	3	3	2	4	4	2	3	2	4	1	1	4	3	1	2
QUESTION	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
ANSWER	2	1	1	3	2	1	4	3	3	4	2	4	2	1	4	2	4	1	3	4

HINTS AND SOLUTIONS

1.(2) नागार्जुन शून्यवाद के प्रवर्तक है। इनके अनुसार दो प्रकार के सत्य है – सवृंतिसत्य एवं पारमार्धिक सत्य

2. (3) जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य वह है जिसमें गुण और पर्याय हो। अर्थात गुण व पर्याय से युक्त सत्ता को द्रव्य कहते है।

3.(4) अन्नभट्ट का कहना है कार्यनियत पूर्ववृत्ति कारणम् अर्थात उत्पत्ति के पूर्ण कार्य कारण में असत् रहता है।

4.(3) क्योंकि जो द्रव्य स्थान नहीं घेरते उन्हें नास्तिकाय द्रव्य कहा जाता है। जैसे – काल।

5.(1) रामानुज ने अचित द्रव्य के तीन प्रकार बताए है – (1) शुद्ध सत्व, (2) मिश्र सत्व, (3) सत्व शून्य।

6.(2) संसार में अनेक मनुष्य हैं और संसार में अनेक पशु है। परन्तु संसार का कोई भी विशेष मनुष्य या पशु सामान्य मनुष्य का पशु नहीं हो सकता। इस प्रकार सामान्य विशेषों से भिन्न है, जाति व्यक्ति से पृथक है। इन्द्रिय जगत् की सभी वस्तुएं विशेष हैं ; अतः इनसे परे पारमार्थिक जगत् को सत्ता अवश्य है जहां सामान्य रहते हैं। जगत् के सभी विशेषों या व्यक्तियों की सत्ता सामान्यों के कारण ही है। सजातियों में एकता तथा विजातीय वस्तुओं में भेद के कारण विज्ञान माने गए हैं।

VPM CLASSES

7.(3) यह किसी वस्तु का तत्त्व या सार है। किसी वस्तु का सार उसकी परिभाषा में व्यक्त होता है। परिभाषा प्रत्ययात्मक होती है। इस प्रकार किसी वस्तु का स्वरूप कारण उस वस्तु या प्रत्यय या विज्ञान है। उदाहरणार्थ, मूर्ति का विज्ञान ही उसका स्वरूप कारण है।

8.(3) जैनियों एवं अद्वैत वेदान्तियों ने कहा है कि व्यक्तियों के अतिरिक्त एवं उनके भिन्न सामान्य की सत्ता नहीं है। व्यक्तियों के सर्वनिष्ट अनिवार्य धर्म को ही सामान्य कहते है। सामान्य की सत्ता व्यक्तियों से पृथक नहीं बल्कि अभिन्न है।

9.(3) यथार्थ ज्ञान को ही प्रमा कहते है। जो वस्तु जिस रूप में है उसे ठीक उसी रूप में आत्मा द्वारा समझना प्रमा है।

10.(1) क्योंकि मीमांसा के अनुसार यथार्थ ज्ञान वह है जो अन्य प्रमाणों से अबाधित है और कोई दोष न हो। प्रमा के कारण को प्रमाण कहते है। अतः कारणता दोष के कारण ज्ञान अप्रामाण्य होता है।

11.(2) भ्रान्ति में स्मरणात्मक ज्ञान का इन्द्रिय सन्निकृष्ट अर्थ पर इतना आंतक छा जाता है कि वह तदाकार प्रतीत होता है। शुक्ति शुक्ति नही अपितु रजताकार प्रतीत होती है। यही भ्रान्ति है। यही कुमारिल भट्ट के मतानुसार 'विपरीत ख्याति' या 'अन्यथाख्याति' है। वस्तु ज्ञान के अभाव के साथ अवस्तु का ज्ञान ही अन्यथाख्याति है।

12.(3) बौद्धों ने ख्याति के संबंध में दो प्रकार के सिद्धात्तों को स्वीकार किया है। बौद्ध दर्शन का माध्यमिक सम्प्रदाय असत्ख्यातिवाद का समर्धन करता है तथा बौद्ध दर्शन का योगाचार (विज्ञानवाद) सम्प्रदाय आत्मख्यातिवाद को स्वीकार करता है।

13.(2) लॉक के अनुसार ज्ञान तीन प्रकार का होता है –

(1) प्रातिम ज्ञान (2) निदर्शनात्मक ज्ञान (3) संवेदन ज्ञान

14.(4) न्याय दर्शन द्वारा ज्ञान के चार स्त्रोत माने गए हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द तथा उपमान।

15.(1) सत्यता के सामंजस्य सिद्धात्त के अनुसार सत्यता का प्रतिमान संसक्तता या सामंजस्य है। किसी भी ज्ञान एक तंत्र के सन्दर्भ में ही सत्य या असत्य हो सकता है।

16.(3) देकार्त ने सन्देह को दर्शन की पहली सीढ़ी कहा है, क्योंकि सन्देह से ही दर्शन आरम्भ होता है।

VPM CLASSES

17.(2) अनुमान के वास्तविक दोष को ही हैत्वामास कहते है। हैत्वाभास का शाब्दिक अर्थ है हैतु का आभास होना अर्थात् जो वास्तविक हैतु नहीं है उसका वास्तविक हैतु के समान प्रतीत होना।

18.(4) न्याय के अनुसार प्रत्यक्ष दो प्रकार के होते है – लौकिक व अलौकिक। अलौकिक प्रत्यक्ष के तीन भेद होते है – सामान्य लक्षण, ज्ञान लक्षण व योगज।

19.(2) जिस व्याप्ति में हैतु व साध्य परस्पर स्थान परिवर्तित नहीं कर सकते उसे विषय व्याप्ति कहते है।

20.(2) ''मितेन लिंगेन अर्थस्य अनुपश्चान्यानमनुमानम्'' अर्थात प्रत्यक्ष प्रमाण से ज्ञात लिंग द्धारा अर्थ के अनु अर्थात पश्चात उत्पन्न होने वाले ज्ञान को अनुमान कहते है।

21.(4) शंकर के अनुसार ज्ञान के तीन साधन है – श्रवण, मनन व निदिध्यासन।

22.(1) चार्वाक दर्शन मोक्ष को परम पुरूषार्थ मानने के जगह काम को परम पुरूषार्थ मानता है क्योंकि वो वेदों में विश्वास नहीं रखता।

23.(4) ग्रहस्थों का प्रधान लक्ष्य था देव ऋण से मुक्त होना।

24.(3) गीता में कर्मवाद को कर्मयोग में प्रवर्तित करने के तीन सोपान है –

(1) फलाकांशा या फलासक्ति का वर्जन

(2) कर्त्तव्य के अभिमान का परित्याग

(3) ईश्वरार्पण

25.(1) गीता में निष्काम भाव की प्राप्ति के लिए स्वधर्म को भी आवश्यक माना गया है। स्वधर्म से तात्पर्य है – गुण और कर्म के आधार पर वर्गीकृत वर्णों के लिए निर्धारित कर्त्तव्यों का पालन करना।

26.(3) W.D. रॉस की उचित की अवधारणा सुख तथा उपयोगिता की परिधि से परे है, साथ ही ये विलक्षण है। रॉस उचित, कर्त्तव्य तथा शुभ को अपरिभाष्य तथा अविश्लेष्य स्वीकार करते हैं।

27.(1) उपरोक्त कथन को नैतिक दृष्टि से जायज नहीं माना जा सकता। मनुष्य को अन्ततः वही करना चाहिए जो नैतिक दृष्टि से उचित हो। यह एक प्रकार कि नैतिक बाध्यता ही है कि मनुष्य केवल नैतिक दृष्टि से उचित कार्य को ही करें। ऐसा करने के लिए यदि उसे सामाजिक या कानूनी बाध्यता का विरोध भी करना पड़े तो उसे ऐसा विरोध करना चाहिए।

VPM CLASSES

28.(3) जेरेमी बेन्थम – अधिकतम संख्या का अधिकतम सुख यही युग्म सही है अतः विकल्प (3) सही है।

29.(4) नैतिक उत्तरदायित्व का निर्धारण करने तथा निर्णय करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है –

(1) प्रयास (2) अज्ञानता (3) विवशता या बाध्यता

30.(3) क्योंकि दण्ड का सुधारात्मक सिद्धात्त दूसरों को अपराधों से रोकने के स्थान पर व्यक्ति के सुधार के लिए दण्ड का विधान करता है। यह सिद्धात्त व्यक्ति को साध्य मानकर उसका सुधार करता है।

31.(3) क्योंकि काण्ट के अनुसार मनुष्य को नैतिक नियमों का पालन किसी बाह्य दबाव या प्रलोभन के कारण नहीं करना चाहिए अपितु बुद्धि संकल्प द्धारा ही करना चाहिए। उपरोक्त कथन स्वाधीनता के नियम से लिया गया है।

32.(2) क्योंकि मिल भी बेंथम के समान नैतिक सुखवाद का समर्थन करते है। मिल के अनुसार मनुष्य का लक्ष्य सुख प्राप्त करना है। अतः कोई भी कर्म तभी शुभ होगा जब उससे सुख प्राप्त हो।

33.(4) क्योंकि न तो यह समाज द्धारा आरोपित है, न ईश्वरीय आदेश है और न न्यायालय का। नैतिक नियम स्वयं शासित इच्छा है, निरपेक्ष आदेश है।

34.(1) बनावट के आधार पर तर्कवाक्यों के दो होते हैं।

(1) सरल तर्कवाक्य (2) मिश्र या जटिल तर्कवाक्य

35.(1) यह कथन सुखवादी कर्म उपयोगितावाद का है। सुखवादी कर्म संबंधी उपयोगितावाद नियम की पूर्णतः उपेक्षा करके किसी विशेष परिस्थिति में किये गए किसी विशेष कर्म की अधिकतम उपयोगिता को महत्व देता है और इसी के

आधार पर उस कर्म के शुभत्व का निर्णय करता है।

36.(4) पर्याप्त कारण नियम – इसे लाइब्नीज ने प्रतिपादित किया है।

37.(2) यह परिवर्तन प्रणाली यह अन्वय प्रणाली तथा व्यतिरेक प्रणाली दोनो को रुपान्तर हो सकती है।

VPM CLASSES

38.(2) युक्तियो की विशषताएँ है वैधता तथा अवैधता। युक्तियाँ वैध या अवैध होती है।

39.(2) तुलनात्मक धर्मों के अध्ययन का मुख्य उद्धेश्य है सभी धर्मो में एकता लाना। इसके अनुसार ये केवल ब्रह्मप्राप्ति के सिद्धान्त द्वारा ही संभव है।

40.(1) फारस के पारसी धर्म को भारतीय वैदिक धर्म के समकक्ष ही माना जाता है।

41.(3) क्योकि इन विश्वविद्यालयो की कृतियों से पता चलता है कि बौद्धो का धर्म साहित्य का भण्डार बहुत विशाल था। बौद्धो ने भारत में नालन्दा तक्षशिला विक्रमशिला इत्यादि में बड़े–2 विश्वविद्यालयो की स्थापना की।

42.(2) कॉमन प्लेस बुक कृति बर्कले की है जो 1705 में लिखि गई थी।

43.(4) तर्कवाक्य चार प्रकार के होते हैः–

A - Allis P – सर्वव्यापी भावात्मक वाक्य

E – No sis P सर्वव्यापी निषेधात्मक वाक्य

I – Some S is P – अंशव्यापी भावात्मक वाक्य

O – Some s is not P – अंशव्यापी निषेधात्मक वाक्य

Note –S = Subject तथा P = Predricate (object)–

44.(4) नोदना लक्षणों धर्मः यह वाक्य मीमांसा से लिया गया है। इसका अर्थ है नोदना धर्म का लक्षण है।

45.(1) क्योंकि शुभाशुभ कर्मो को फल भोग के लिए आत्मा को अमर मानना आवश्यक है। अतः कर्मवाद आत्मा की अमरता में विश्वास का आधार है।

46.(2) प्रयोगो का विचार व्यवहार के स्तर के अन्तर्गत आता है। जैसे– उंगली से खरोचना लोहे से खरोंचना आदि।

47.(2) वियना में तार्किक भाववाद का उद्भव हुआ था। तार्किक भाववाद वैचारिक गति है। इसका प्रारम्भ एक वैचारिक आंदोलन के रुप में हुआ।

48.(4) क्योंकि वस्तुस्थिति को समझाने में विट गेन्सटीन एक नए भाव विषय का सहारा लेते है। उन्होने कहा की वस्तुस्थिति विषयो को संघात है। यदि हम किसी विषय का जापते है तो हम इसकी वस्तुस्थिति में होने की सभी सम्भावनाओ को जानते है। तो वस्त स्थिति की संरचना का एक विषय है।

VPM CLASSES

49.(4) भाषा वाक्य से वाक्य के आधार पर नही अपितु समग्र रुप से कार्य करती है– यह मान्यता क्वाइन की है।

50.(3) सत्ता का अनुभव मूलक मानने के कारण बर्कले को दृष्टि–सृष्टि वादी कहा गया है। बर्कले के अनुसार दृष्टि ही सृष्टि है, अर्थात् अस्तित्व तो अनुभव पर आश्रित है।

51.(4) अभिप्रायः एक व्यापक शब्द है। कुछ विद्वानो के अनुसार अभिप्राय ही नैतिक निर्णय का विषय होता है। तथा इसमें प्रयोजन तथा परिणाम दोनो का समन्वय होता है।

52.(2) वैधन्याय वाक्य में सिर्फ प्रथम आकृति में ही ऐसा नियम है जब साध्य आधारिका में साध्य पद प्राप्त होता है तो पक्ष आधारिका में इसका हैतु पद व्याप्त नहीं हो सकता। जैसे–

प्रथम आकृति

$$\begin{array}{l} E\ M\overline{P} = 0 \\ \underline{A\ S\ M = 0} \\ E \therefore SP = 0 \end{array}$$

53.(4) बेन्थम अनुभववादी है। उन्हे स्वयंसिद्ध सिद्धियाँ है। वे आगमनात्मकवादी है। अतः प्राकृतिक अधिकार स्वयंसिद्ध न होकर आनुभविक सिद्धियाँ है।

54.(3) पीपर्स की फलवादी विधि सामान्य रुपों की इस धारणा में निहित है कि ''विचार की सत्यता या असत्यता का अर्थ उसकी वैधता , परिणाम अथवा फल के आधार पर जाँची जानी चाहिए। उनके अनुसार व्यवहार में किसी ज्ञान या विश्वास की उपयोगिता को सत्य अथवा असत्य कहा जाता है।''

55.(1) नियामक विज्ञान के निर्णयो की प्रकृति मूल्यात्मक या मूल्याश्रित होती है।

56.(4) प्लेटो के अनुसार आत्मा स्वरुपगत जीवन में भाग लेती है। मृत्यु जीवन के विपरीत है। यह जीवन का विरोधी है। अतः आत्मा अमर है।

57.(2) सामान्य वाक्य के रुप में आगमन के चार लक्षण है–

1. किसी वाक्य का निरुपण करना
2. सामान्य वाक्य बनाना
3. यथार्थ वाक्य बनाना
4. अनुभव के आधार पर सामान्य वाक्य बनाए जाते है।

VPM CLASSES

58.(4) धार्मिक ज्ञान संबंधी सिद्धान्तो को तीन वर्गो में विभाजित किया गया है–

1. संज्ञानात्मक सिद्धान्त
2. असंज्ञानात्मक सिद्धान्त
3. अर्द्धसंज्ञानात्मक सिद्धान्त

59.(3) अब्राहम ज्येइबर यहूरी धर्म से संबंध रखता है क्योकि ये यहूदी धर्म की शाखा– सुधार बादी यहूदीयो का सबसे शक्तिशाली नेता था।

60.(1) मनुष्यों में अवतार की प्रथम कोटि क्रोध की प्रतिमूर्ति विवेकशून्य, हिंसक प्रवृति के परशुराम है क्योकि इस अवतार में इन्होने काफी नरसंहार किया था।

61.(3) घटना विज्ञान (फिनामेनोलॉजी) के प्रमुख सिद्धान्त कारो में अल्फ्रेड शूत्ज, पीटर वर्जर और लकमैन का नाम अग्रणी है। इस उपागम के प्रणेता जॉर्ज सान्त्याना माने जाते है।

62.(2) फिनोमेनोलॉजी का कहना है कि समाज की वास्तविकता को जानने का केवल एक तरीका है उसे व्यक्ति अपनी इन्द्रियो और मानसिक प्रक्रियाओ के द्वारा अनुभव करता है। दूसरे लोगो के अस्तित्व उनके मूल्य और मानक तथा भौतिक वस्तुओ के अस्तित्व को दूसरे लोगो की चेतना और जागृति ही जाना सकता है।

63.(4) अद्धैत वेदान्त के प्रस्थान हैं–

विवरण प्रस्थान प्रकाशात्मा भामती प्रस्थान वाचस्पत्तिमिश्र वार्तिक प्रस्थान सुरेश्वराचार्य

64.(2) शंकर ने पारमार्थिक सत्ता के रुप में त्रिकालाबाधित सत्ता को पारमार्थिक सत्ता माना है। जैसे– ब्रह्म।

65.(2) क्योकि रामानुज के अनुसार परम सत् (ब्रह्म) चित्र और अचित्र अंशो से विशिष्ट होते हुए भी एक है।

66.(3) क्योकि ईश्वर की कृपा से ही मोक्ष प्राप्त होता है और ईश्वरीय कृपा प्राप्ति का साधन भक्ति है। अतः रामानुज मोक्ष प्राप्ति का सर्वोच्च साधन भक्ति को मानते है।

67.(3) शुद्धाद्धैतवाद के प्रतिपादक बल्लभाचार्य है। उनके अनुसार ब्रह्म माया के प्रपंच से रहित विशुद्वा सर्वज्ञ, सर्वधर्म विशिष्ट सच्चिदानन्द स्वरुप है। वह जगत का उपादान और निमित्त कारण है। जगत उसका लीलामात्र है।

VPM CLASSES

68.(2) क्योकि मोक्ष किसी अप्राप्य की प्राप्ति नही मोक्ष नित्य है। ज्ञान तो केवल अज्ञान का नाश करता है।

69.(4) भास्कराचार्य को भेदाभेदवाद नामक सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है।

70.(4) गाँधी जी के दर्शन पर कई भारतीय दर्शनो की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है जैसे– वेद उपनिषद गीता, अद्धैत वेदान्त तथा वैष्णव वेद्वान्त आदि का।

71.(2) क्योकि सर्वोदय का आधार प्रेम है जबकि उपयोगितावाद का आधार सुख है। अतः सर्वोदय उपयोगितावाद नही है।

72.(3) गाँधीजी के नैतिक सिद्धान्तो में सत्यग्रह की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सत्याग्रही बनने के लिए आत्म संयम सहिष्णुता, ईमानदार सरल, निष्कपट, निर्भर, दृढ संकल्पी तथा ईश्वर के प्रति अट्ट आस्था जैसे गुणों से मनुष्य को युक्त होना चाहिए।

73.(2) क्योकि स्तेय का अर्थ चोरी करना है स्तेय अर्थात चोरी करने का सर्वथा परित्याग करना ही अस्तेय है।

74.(4) क्योकि गाँधीजी की दृष्टि से सत्य और अहिंसा की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना परमावश्यक है। संयम ब्रह्मचर्य का दूसरा नाम है।

75.(1) क्योकि गाँधीजी ब्रह्मचर्य पालन को स्त्री व पुरुष दोनो के लिए आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार विवाहित सम्पत्ति को भी ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। उपरोक्त कथन महात्मा गाँधी का है।

76.(1) राधाकृष्णन को पूर्व और पश्चिमी विचारधारा का समन्वय प्रस्तुत करने के कारण पूर्व और पश्चिम का सम्पर्क अधिकारी कहा जाता है।

77.(4) गांधी जी के अनुसार मानव ही ईश्वर की अभिव्यक्ति है।

78.(3) (1) थैलस – जल

(2) अनेक्जिमेण्डर – असीम

(3) अनेक्जिमेनीज – वायु

(4) पाइथागोरम – संख्या

79.(1) सोफिस्ट सम्प्रदाय का संस्थापक प्रोटागोरस को माना जाता है।

VPM CLASSES

80.(2) विशेष और सार्वभौम प्रत्यय के सम्बंध को प्लेटो सहभागिता कहता है। समस्त विशेष वस्तुएं एक सामान्य उद्देश्य के अधीन अपने अनुकूल प्रत्यय में भाग लेती है। यह सहभागिता ही उनका परस्पर ज्ञानात्मक सम्बंध स्थापित करती है।

81.(2) पुद्गल गति और परिणाम का आधार है। इसके कारण प्रत्येक तत्व वस्तु या व्यक्ति परिवर्तित तथा गतिशील होते हुए भी बना रहता है।

82.(1) देकार्त प्रख्यात दार्शनिक, गणितज्ञ तथा विज्ञान–प्रेमी था। उसे आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का जनक माना जाता है, क्योंकि देकार्त ने दर्शन के क्षेत्र में बुद्धिवाद, प्रकृतिवाद, वैज्ञानिकता तथा विचार–स्वातंत्र्य को प्रमुख स्थान दिया। उसके प्रसिद्ध दार्शनिक ग्रंथ ये हैं– दार्शनिक पद्धति पर विचार–विमर्श (डिस्कोर्स डीला मेथेडे) प्राथमिक दर्शन की साधना (मेडिटेशन्स फिलॉसफी)। इन ग्रंथों में नवीन युग की सभी विशेषताएं विद्यमान हैं। गणितज्ञ तथा बुद्धिवादी होने के नाते देकार्त ने दार्शनिक क्षेत्र में नई अध्ययन–विधि की स्थापना की जिसका भावी चिन्तन पर व्यापक प्रभाव पड़ा।

83.(1) स्पिनोजा ने स्वयं द्रव्य की परिभाषा दी और कहा– ''द्रव्य से मेरा अभिप्राय उससे हैं जो आप में है, और अपने द्वारा चिन्त्य होता है। अन्य शब्दों में, द्रव्य वह है जिसका चिन्तन किसी अन्य वस्तु के चिन्तन पर आधारित नहीं होता है।''

84.(3) क्योंकि चिदणु अभौतिक स्वरूप है अर्थात् अध्यात्मिक है, लाइब्निज चिदबिन्दुओं की मानसिक या आध्यात्मिक शक्तियों के रूप में व्याख्या देता है।

85.(2) क्योंकि लॉक के अनुसार मन कोरी पट्टी के समान होता है। समस्त प्रत्यय अनुभव से अर्थात् संवेदन और स्वसंवेदन से प्राप्त होते हैं।

86.(1) बर्कले के अनुसार ज्ञान का स्त्रोत अनुभव है, जो दो प्रकार का होता है– (1) संवेदन, (2) अनुचिन्तन।

87.(4) ह्यूम ने कारणता के तीन घटक बताए हैं–

(1) समीपता (2) पूर्ववर्तिता (3) अनिवार्य संबंध

88.(3) काण्ट ने 12 धारणाओं का विभाजन चार प्रकार से किया जो हैं– परिमाण, गुण, संबंध तथा प्रकार।

89.(3) हैगेल ने 20 वर्ष की अवस्था में डॉक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त की। हैगेल ने चिन्तन से सम्पूर्ण विश्व दर्शन तथा विचारधारा ओत–प्रोत पाई जाती है।

90.(4) प्रमुख दार्शनिक परम्परा प्रत्ययवाद के कटु आलोचक के रूप में मूर व रसेल का नाम अग्रगण्य है।

91.(2) विटगेन्सटीन का विश्वास है कि दार्शनिक चिन्तन का केन्द्र भाषा ही है क्योंकि दार्शनिक समस्याओं के उद्‌भव तथा उनके निदान दोनों का स्त्रोत भाषा ही है।

92.(4) जेम्स के अनुसार सत्य विचार तथा विश्वास का लक्षण है। वह ऐसे विचार या विश्वास का जिसकी अभिव्यक्ति क्रियात्मकता में है, क्रियाओं तथा व्यावहारों में है।

93.(2) रविन्द्रनाथ ने मानव की आत्मा में अनन्त एवं अविनाशी ईश्वर का वास माना है। आत्मा समीम है, पर उसकी असीमता कभी नष्ठ नहीं होती। रवीन्द्रनाथ की मान्यता है कि ससीमता रहित असीमता नहीं है, अपितु ससीमता में ही असीमता विद्यमान है। अनेकता में ही एकता समाहित है।

94.(1) ह्यूम के अनुसार 'हैं' तथ्यात्मक निष्कर्ष से 'चाहिए' अर्थात मूल्यात्मक निर्णय का निगमन सामान्यतः संभव नहीं है।

95.(4) क्योंकि प्लेटो प्रयोजनवादी होने के कारण यंत्रवाद के विरोधी है। प्लेटो विश्व–प्रक्रिया को यंत्रवत किन्हीं नियमों से आबद्ध नहीं मानते हैं।

96.(2) अरस्तू के अनुसार प्रयोजन कारण यह साध्य या उद्धेश्य है, जिसकी सिद्धि के लिए वस्तु का निर्माण किया जाता है।

97.(4) देकार्त के अनुसार बुद्धि के व्यापार तीन है।

1. प्रतिमान 2. निगमन 3. आगमन

98.(1) एथिका के लेखक स्पिनोजा है तथा इसकी विषयवस्तु का क्षेत्र सत्ता मीमांसा अथवा तत्वमीमांसा है।

99.(3) हमारा ज्ञान संस्कार और विज्ञान तक सीमित है। सभी संस्कार तथा विज्ञान क्षणिक हैं तथा परिमाणी हैं। इनसे नित्य तथा अपरिमाणी आत्मा का बोध संभव नहीं। हमारा मन क्षणिक संस्कारों का आगार है जिस प्रकार नदी में प्रवाह क्षण–क्षण उठते और विलीन हो जाते हैं, उसी प्रकार मन में संस्कार तथा विज्ञान सर्वदा आते जाते रहते हैं। अतः ह्यूम के अनुसार स्वभावतः क्षणिक संस्कार नित्य आत्मा को व्यक्त नहीं कर सकते।

VPM CLASSES

100.(4)योग का अष्टांग मार्ग

1. यम
2. नियम
3. आसन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि

VPM CLASSES